MENTORSHIP PROGRAMME मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-3

(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF OPT-21 **M1-HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): VIPIN DUBEY

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): vipdubey003@gmail.com

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 28/11/2021

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2021] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2021]:

0	8	0	6	9	5	3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 157½ टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures) E-51

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures) L-4

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

सारे उत्तर काफी अच्छे हैं।
विषय-वस्तु पर पकड़ काफी अच्छी है।
भूमिका एवं निष्कर्ष प्रभावशाली है।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) चोट सताँणीं बिरह की, सब तन जरजर होइ।
मारणहारा जाँणि है, कै जिहिं लागी सोइ।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग दी गयी काव्य पंक्तियाँ भक्तिकाल की संतकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीर द्वारा रचित है जिसका संकलन श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रंथावली' नाम से किया है। इसमें 'बिरह की महिमा' अभिव्यंजित है।

व्याख्या कबीर कहते हैं कि बिरह की मार बड़ी भयानक होती है। इससे पीड़ित व्यक्ति का शरीर जर्जर हो जाता है और ईश्वर का यह बिरह वही जान सकता है जिस पर यह बीतता है।

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - पंचमेल खिचड़ी (अवधी प्रधान)
  - 'जरजर' जैसे तद्भव शब्द
- गेयता, संगीतात्मकता बनी हुयी है।
- छन्द - दोहा
- तुक बना हुआ है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- बिम्ब के प्रति आग्रह नहीं है, फिर भी स्पर्श बिम्ब विधमान है।

निष्कर्ष

- कबीर ने ईश्वर के प्रति भक्त के विरह की पीड़ा प्रस्तुत की है।
- अन्य स्थानों पर भी वे कहते हैं –

"अँखड़ियाँ झाईं पड़ी पंथ निहारि निहारि
जीभड़िया छाला पड़्या राम पुकारि पुकारि।"

- आराध्य के प्रति यह विरह भाव सूर की गोपियों के यहाँ भी मौजूद है

प्रासंगिकता

इहलौकिकता, निरीश्वरवाद के वर्तमान सन्दर्भ में परम तत्व के प्रति समर्पण का भाव इसमें प्रदर्शित होता है।

V. Good
7/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत काव्य - अवतरण भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति काव्य धारा के श्रेष्ठ पुरुष कवि 'सूरदास' की रचना से उद्धृत है जिसका संकलन आचार्य शुक्ल ने 'भ्रमरगीत सार' नाम से किया है। इसमें गोपियों के विरह का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

व्याख्या

सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण कुछ दायित्वों के पूर्ति हेतु मथुरा चले गए हैं जिनसे गोपियाँ एवं राधा विरह वेदना से पीड़ित हैं। यह विरह कृष्ण की स्मृतियों से और अधिक बढ़ जाता है, यहाँ तक कि कृष्ण की वंशी की मधुर तान भी उन्हे सताती है। जब से कृष्ण से विरह दूरियाँ बढ़ी हैं उनके नेत्रों से निकलते हुए

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं और यह विरह भाव प्रकृति के साहचर्य से और बढ़ता जाता है।

काव्य सौंदर्य

- भाषा – सधी हुयी ब्रजभाषा
- बिम्ब – स्पर्श, दृश्य
- अलंकार – विरोधाभास (सीतल चंद अगिनि)
- संगीतात्मकता
- प्रकृति की उपस्थिति

विशेष

- विरह की दशा कारुण एवं हृदयविदारक है।
- प्रकृति अन्य कवियों जैसे वर्ड्सवर्थ, शेक्सपीयर, वाल्मीकि, कालिदास आदि रचनाओं में इसी प्रकार उपस्थित है।
- प्रेम की वास्तविकता विरह में दिखती है, दैहिक उल्लास में नहीं।

प्रासंगिकता

वर्तमान यांत्रिक जीवन में प्रेम एक बिकाऊ वस्तु बन गया है। ये पंक्तियाँ प्रेम की गहराई व्यक्त कर रही हैं।

अच्छा है
6½

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

संदर्भ एवं प्रसंग

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि 'बिहारी' की रचना 'बिहारी सतसई' से ली गयी। इन पंक्तियों में श्रृंगार की केन्द्रीयता है।

व्याख्या

रीतिकाल के दरबारी माहौल में श्रृंगार का केन्द्र में रहना इस प्रकार की पंक्तियों की रचना हेतु प्रेरित करती है। बिहारी ने इन पंक्तियों में नायिका एवं नायक के प्रेम का वर्णन किया है जिसमें नायिका नायक के संग प्रेम क्रीड़ा कर रही है। इस क्रीड़ा में उपजे आनंद में नायक और नायिका डूब जाना चाहते हैं।

काव्य सौंदर्य

- भाषा - परिष्कृत ब्रजभाषा
- बिम्ब - दृश्य
- श्रृंगार रस में प्रेम क्रीड़ा
- अनुभाव की सघनता
- दोहा (48 मात्राएँ)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

•) अलंकार - अनुप्रास ('क' की आवृत्ति)

विशेष

•) बिहारी की 'कल्पना की समाहार क्षमता' और 'भाषा की समास क्षमता' का सुन्दर उदाहरण है।

•) जॉर्ज ग्रियर्सन ने बिहारी के शिल्प से प्रसन्न होकर कहा है - "पूरे यूरोप में एक भी कवि बिहारी की बराबरी नहीं कर सकता।"

•) बिहारी ने अनुभाव की सघनता से 'गागर में सागर' भर दिया है।

प्रासंगिकता

बिहारी की 'बिहारी सतसई' रीतिकालीन मानसिकता को अभिव्यंजित करने के साथ-साथ ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में योगदान देती है।

Good

7/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करै पिउ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोइ कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पंखि।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग

भक्तिकाल के निर्गुण प्रेमाश्रयी काव्यधारा के शिखर कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' की सर्वोत्कृष्ट रचना 'पद्मावत' से ली गयी इन पंक्तियों में नागमती की विरह का वर्णन है।

व्याख्या

नागमती की विरह प्रत्येक मास में बढ़ती ही जा रही है। रत्नसेन के सिंहलद्वीप चले जाने पर नागमती ने दुःख एवं रोते हुए किसी तरीके से समय बिताया है। ऐसे में उनकी हालत जर्जर हो गयी है, न तो शरीर में रक्त बचा है, नही माँस। विरह की यह व्यथा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उसे जलाने पर आतुर है। इससे बचने के लिए वह रत्नसेन के आने की कामना करती है।

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - ठेठ अवधी देसीपन और मिठास बना हुआ है।
- अलंकार [उत्प्रेक्षा / ऊहात्मकता (दहि कोयला - - -)
- बिम्ब - दृश्य
- कड़वक बद्ध शैली
- प्रकृति की भूमिका

विशेष

- नागमती का विरह रानीपन में नहीं नारीपन में।
- विरह की गार्हस्थिकता, सात्विकता, पवित्रता।
- मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण।
- नागमती का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है' - (आचार्य शुक्ल)

V. Good 7 10

प्रासंगिकता

वर्तमान में प्रेम प्रतिबद्धता का नहीं समीकरण का विषय बन गया है ऐसे में ये पंक्ति ~~विर~~ प्रेम के वास्तविक मूल्य एवं रूप का एहसास कराती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त में निज शक्ति का,
जिससे रुका वह स्त्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनीतता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर-बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना 'भारत भारती' (1912ई) से ली गयी इन पंक्तियों में भारत की बदलती परिस्थिति का चित्रण है

व्याख्या गुप्त जी कहते हैं कि भारत का अतीत स्वर्णिम था किंतु धीरे-धीरे शक्ति का अभिमान उत्पन्न होने लगा। इस अहं भाव ने भारतीय मूल्यों श्रद्धा, भक्ति, शील आदि का विनाश किया और अनुदारता, हिंसा, उपभोक्तावादी संस्कृति को बल मिलने लगा, इसी से भारत की दुर्गति हुयी एवं पराधीनता मिली।

काव्य सौंदर्य

- भाषा [खड़ी बोली, तत्सम
  अभिधात्मक, इतिवृत्तात्मक, गद्यात्मक
- हरिगीतिका छन्द
- तुक के प्रति आग्रह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

•) अलंकार, बिम्ब, प्रतीकात्मकता के प्रति लगाव नहीं।

विशेष

•) हाली ने उर्दू में रचना 'मुसद्दस' के समान उद्बोधनात्मक रचना 'भारत भारती' है।

•) मायावी द्वैत समाप्त हो चुका है।

•) अतीत का स्वर्णमयी व्याख्यान, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने यहाँ भी (सबसे पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो)

•) राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्रवाद की भावना विकसित करते हैं।

प्रासंगिकता

महावीर प्रसाद द्विवेदी भारत-भारती के विषय में कहते हैं-

"यह सोते हुए को जगाने वाला, भूले हुओं को सही राह पर लाने वाला एवं निरुत्साहितों को उत्साहित करने वाला है।"

उत्तम

7/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावादी काव्य के प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद के भाव-प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' में उनका जीवन दर्शन व्यक्त हुआ है। प्रसाद के समय भारतीय दर्शन नव्यवेदांत के साथ-साथ पाश्चात्य दर्शन स्पेन्सर, डार्विन, मार्क्स आदि का तेजी से प्रचलन हो रहा था; इन सभी का संश्लेषण कामायनी में दिखता है।

कामायनी का मूल दर्शन 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' या शैवाद्वैतवाद दर्शन है जिसे 'आनन्दवाद' भी कहते हैं। इस दर्शन के अनुसार मनुष्य की मूल समस्या विषमता की है। यह वही समस्या है जो मुक्तिबोध के ब्रह्मराक्षस में भी विद्यमान है अर्थात भाव-तर्क-कार्य में सामंजस्य का अभाव। प्रस्तुत है

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस समस्या का समाधान है समरसता की प्राप्ति। अर्थात जो स्थिति स्कन्दगुप्त की रचना के अन्त में थी या मनु की रचना के अन्त में है और जिसका प्रतिनिधित्व श्रद्धा एवं देवसेना कर रही हैं–

"समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनन्द अखण्ड घना था" (आनन्दावस्था)

इसके अतिरिक्त कामायनी में शैवागम सम्प्रदाय, हेराक्लाइटस, बर्गसाँ का क्षणवाद व्यक्त हुआ है जो मनु रचना के प्रकाश में कहता है –

"जीवन तेरा क्षुद्र अंश है, व्यक्त नील घनमाला में
सौदामिनी संधि सा सुन्दर, क्षण भर रहा उजाला में"

जयशंकर प्रसाद ने भारतीय दर्शन गांधीवाद की भी अभिव्यक्ति की है। कामायनी की श्रद्धा अहिंसा, समर्पण, सत्य की भावना से गांधी का ही प्रतिनिधित्व कर रही है–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ये प्राणी जो बचे हुए हैं इस अचला जगती के
उनके कुछ अधिकार नहीं हैं, वे सब ही हैं कीलें।"

अन्य दर्शनों की भी अभिव्यंजना कामायनी में दिखायी पड़ती है। जैसे डार्विन, स्पेन्सर का शक्ति स्पर्धावाद, फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद एवं मार्क्सवाद। ये सब दर्शन कामायनी में घुले हुए नजर आते हैं जिससे जीवन के विभिन्न आयामों का सटीक प्रदर्शन हो सके। द्रष्टव्य है -

"विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान।"
(मार्क्सवाद)

"स्पर्धा में जो उत्तम ठहरें वे रह जावें
संसृति का कल्याण करें शुभ मार्ग बतावें।"
(डार्विनवाद)

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में अपने मूल दर्शन प्रत्यभिज्ञा के साथ-साथ तत्कालीन समय के अन्य दर्शनों को सुन्दर रूप से प्रस्तुत संश्लेषित किया है

उत्तम
12 1/2
20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'राम की शक्तिपूजा' पौराणिक आख्यान के ढांचे में रची गई अत्यन्त संभावनाशील रचना है जिसकी प्रतीकात्मकता ने व्याख्याओं के नए द्वार खोले हैं। इसकी एक व्याख्या तत्कालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ती है।

'राम की शक्तिपूजा' में निराला की मूल समस्या है- "अन्याय जिधर है उधर शक्ति एवं रावण अधमरत भी हुआ अपना मैं हुआ अपर।" वास्तव में यही समस्या 1936 में राष्ट्र नायक भारत की भी है कि शक्ति अंग्रेजों के पक्ष में है जो रावण का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

1936 की स्वाधीनता संग्राम वर्षों से चले आ रहे अंग्रेजों के शोषण का परिणाम था। राष्ट्रनायक गांधी जी की 1 वर्ष के भीतर स्वतंत्रता दिलाने की शपथ धूमिल हो चुकी थी, सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

असफल हो चुका था। ऐसे में गांधी में भी निराशा, विकलता की भावना आ गयी थी-

"फिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय रह रह उठता जग जीवन में रावण जय भय।"

ऐसा नहीं है कि 'महाशक्ति' (अंग्रेजों के अत्याचार) का कोई उत्तर नहीं है। स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्ति का चरण (हिंसात्मक) विफल हो चुका था और हनुमान (सिलक विद्रोह) इसका प्रत्युत्तर बन सकते थे कि अनियंत्रित हिंसा राष्ट्रनायक के प्रावधानों के विपरीत था।

ऐसे में स्वाधीनता का रास्ता अनेक वर्ग/समाजवादी लोग हिंसा के माध्यम से देख रहे थे। सुभाष चन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारी गांधी को शक्ति साधने का सलाह देते हैं- "शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।"

हनुमान क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रतीक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वास्तव में यह शक्ति अपनी आंतरिक क्षमताओं को पहचानने के है तथा राष्ट्र के सभी लोगों में राष्ट्रवाद की भावना प्रभावित करने के है जिससे अंग्रेज भारत छोड़ दें। 1936 में गांधी यही प्रयास कर रहे हैं। इनका एक मन अभी भी पराजित नहीं हुआ है –

"वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय।"

यही मन उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आन्दोलन चलाने को प्रतिबद्ध करता है और उनमें पुनः विश्वविजय की भावना भर देता है –

"होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन।"

निष्कर्षतः 'राम की शक्तिपूजा' छायावाद के अन्य काव्यों की तरह ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ती है और स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रवाद की भावना पुष्ट करती है

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~मानवादी~~
मानववादी रचनाकार 'रामधारी सिंह दिनकर' की विचारप्रधान लंबी कविता 'कुरुक्षेत्र' में कवि का युद्ध दर्शन व्यक्त हुआ है और शिल्पगत वैशिष्ट्य से यह अभिव्यक्ति अधिक सफल हो पायी है।

काव्य शिल्प के तत्व-

(1) छायावादी काव्य में प्रारंभ हुयी लंबी कविता की परंपरा को 'कुरुक्षेत्र' भी धारण करती है। यह विचारप्रधान लंबी कविता है जिसमें युधिष्ठिर एवं भीष्म पितामह के संवादों से विचार व्यक्त हुए हैं।

(2) द्विवेदी युग में भाषायी द्वैत समाप्त हो चुका था और अब उसके परिष्कार एवं परिमार्जन का समय था। यही स्वरूप हमें कुरुक्षेत्र में दिखता है-
"रुग्ण होना चाहता कोई नहीं रोग लेकिन आ गया जो पास हो,"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा के स्तर पर खड़ी बोली, तत्सम शैली, ओजस्विता, तेजस्विता की भावना भरी हुयी है -

"छिनता हो स्वत्व कोई और तू त्याग तप से काम ले यह पाप है
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे, बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है"

(3) कुरुक्षेत्र में प्रतीकात्मकता बनी हुयी है। महाभारत के शांतिपर्व पर आधारित इस रचना में द्वितीय विश्वयुद्ध एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की झलक दिखायी पड़ती है।

(4) काव्य-शिल्प के अन्य लक्षण जैसे ध्वन्यात्मकता बनी हुयी है। आचार्य शुक्ल के अनुसार "नाद योजना कविता की आयु में वृद्धि करते हैं।"

(5) छन्द एवं तुक के प्रति नये प्रयोग किये गए हैं। हालांकि आंतरिक लय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space.)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की उपस्थिति पूरी रचना में बनी हुयी है।

(6) अलंकार एवं बिम्ब की उपस्थिति भी दिखायी देती है। शब्दालंकार के साथ-साथ अर्थालंकार की गूंज भी दिखायी भी देती है, बिम्ब के रूप में स्पर्श, दृश्य एवं श्रव्य बिम्ब भी विद्यमान हैं—

"खिलो फूलो मत दृश्य रत अपना मुझको पीने दो
अचल है साम्राज्य शान्ति का जियो और जीने दो।"

(दृश्य बिम्ब)

V. Good

'कुरुक्षेत्र' में दिनकर ने नये प्रयोग किए हैं इन्हीं प्रयोगों ने आगे के कवियों को प्रयोग की नयी दिशा दी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अज्ञेय के रचनाकाल का महत्वपूर्ण द्वन्द्व व्यक्ति और समाज के अन्तर्द्वन्द्व का था। जहाँ एक ओर मुक्तिबोध समाजवादी आधुनिकतावाद का प्रतिनिधित्व कर रहे थे तो वहीं अज्ञेय व्यक्तिवादी आधुनिकतावाद का प्रतिनिधित्व कर रहे थे; दोनों विचारधारा अपने-अपने तरीके से व्यक्ति और समाज का संबंध तलाश रहे थे।

अज्ञेय ने समाज और व्यक्ति के संबंध को 'हम नदी के द्वीप हैं' में भी उठाया है वे कहते हैं—

"हम नदी के द्वीप हैं,
× × × × × × ×
वह हमें आकार देती है।"

स्पष्ट है कि समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'असाध्यवीणा' में भी प्रियंवद यदि वीणा को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

साध्य पाया है तो वह इसीलिए कि उसने उस समाज को समझने का प्रयत्न किया जिसके वीणा में ध्वनि को समाहित किया है
जैसे- मधु का टपकना, चिड़ियों की चहचह, हिमशिखर के रहस्य, बादलों का गर्जन।"

जब प्रियंवद इन ध्वनियों को महसूस करता है तो स्वयं समाज से विरत रहता है -
"पर उस स्पंदित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा है।"

इसकी उच्च स्थिति वहाँ होती है जब वह अपने को वीणा के समाज में विलीन कर देता है -
मुझे स्मरण है पर
पर मुझमें मैं भूल गया हूँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सुनता हूँ
मैं, तुमसे परे, शब्द में लीयमान।"

इसका प्रभाव यह होता है कि वीणा में ध्वनि उत्पन्न होती है और ये ध्वनि उन सभी क्रियाकलापों की गूंज है जिनसे निर्मित हुयी है। यही कारण है कि इसका स्वरूप ब्रह्म जैसा है -

"अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू
जिसमें सोता है अखण्ड
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय।"

इस ध्वनि का परिणाम सभी व्यक्तियों पर अलग-अलग पड़ा है जो कवि का अस्तित्ववाद रूसे परिभाषित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने अनुरूप अर्थ ग्रहण करते हैं -
राजा ने भी सुना,
x x x x x x

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रानी ने भी अलग सुना
x x x x
रुठ गयी तथा सब अपने-अपने कामों
युग पलट गया।"

इस माध्यम से लेखक ये बताना चाहते हैं कि "व्यक्ति समाज में स्वतंत्र है, समाज से नहीं।" व्यक्ति का व्यक्तित्व समाज द्वारा निर्धारित होता है और व्यक्ति के तार्किक परिणाम से समाज में परिवर्तन आता है

Good 12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-भारती' के 'काव्य-शिल्प' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत-भारती' 1912 ई० में रची गयी एक महत्वपूर्ण रचना है जिसने संवेदना के साथ-साथ शिल्पगत क्षेत्र में भी नये कीर्तिमान स्थापित किये।

मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' की शिल्पगत विशेषताएं -

(1) काव्यरूप 'भारत-भारती' में कथा का सुसंबद्ध ढांचा है एवं कसाव बना हुआ है। इसे उद्बोधनपरक काव्य माना जाता है क्योंकि डांन में भी गुप्त जी ने हाली के उर्दू में मुसद्दस से इसकी तुलना करते हुए उद्बोधनपरक काव्य के रूप में इसकी चर्चा की है।

(2) भारतेन्दु युग का भाषायी द्वैत इसमें धीरे-धीरे समाप्त हो गया और खड़ी बोली ने काव्यभाषा का रूप ले लिया। हालांकि इसमें इतिवृत्तात्मकता वाचालता एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

गेयात्मकता भी हुयी है। जैसे

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"

खड़ी बोली के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी हुआ है। जैसे - यूरोपीयन, सिल्ली, बैलून आदि।

③ गुप्त जी तुक, छन्द के प्रति खास ध्यान रखते हैं। प्रत्येक पंक्ति में तुक छन्द एवं लय की उपस्थिति बनी रहती है जैसे

"संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है
उसका कि जो ऋषि भूमि है वह कौन भारतवर्ष है।"

④ हरिगीतिका छन्द उनका प्रिय छन्द है जो 'भारत-भारती' की सभी पंक्तियों में व्याप्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(5) अलंकार, बिम्ब एवं प्रतीकों के प्रति आग्रह नहीं दिखायी देता है किंतु जगह-बगह उत्प्रेक्षा अलंकार, रूपक अलंकार, विरोधाभास अलंकार एवं बिम्ब बन ही जाते हैं। उदाहरण

"पूजन किया पति का सिर्यों ने अश्रुपूर्ण निधान से अंचल पसार प्रणाम कर फिर की विनय भगवान से"
(दृश्य बिम्ब)

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त ने शिल्प के स्तर पर जो नए प्रयोग किये उनसे ही खड़ी बोली का परिष्कृत एवं परिमार्जित स्वरूप विकसित हो पाया।

9½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप और औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फैंटेसी शिल्प से आशय उस कल्पना या स्वप्न से है जिसे वास्तविक जीवन कि अपूर्णताओं के चलते आभासी रूप में पूरा किया जाता है। मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण उपलब्धि फैंटेसी शिल्प है जो ब्रह्मराक्षस एवं अंधेरे में व्यक्त हुआ है।

फैंटेसी शिल्प के प्रयोग के कारण बताते हुए मुक्तिबोध कहते हैं- "यथार्थ के तत्व परस्पर गुंफित होते हैं और पूरा यथार्थ गतिशील रहता है" इस गुंफित एवं यथार्थ गतिशील की उपलब्धि वास्तविक शिल्प के माध्यम से तो नहीं हो सकती, ऐसे में उन्हें फैंटेसी शिल्प का सहारा लेना पड़ा।

फैंटेसी शिल्प के प्रयोग के कारण ही वह अन्तर्जीवन के द्वन्द्व को दिखा पाते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हैं। इनमें 'ब्रह्मराक्षस और 'मैं' के द्वन्द्व को उभारना शामिल है। ब्रह्मराक्षस के आंतरिक पक्ष की अभिव्यक्ति का सुन्दर नमूना इस उदाहरण में दिखता है -

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला,
उसमें अंधेरी सीढ़ियाँ
वे एक आभ्यंतर निराले लोक की
एक चढ़ना,
और उतरना
मोच पैरों में व
छाती पर अनेकों घाव।"

इस आंतरिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ दो घटनाओं के मध्य तारतम्यता स्थापित करने संबंधी बाध्यता की अनुपस्थिति भी, फैंटेसी शिल्प के प्रयोग का औचित्य बढ़ाती है। इस फैंटेसी शिल्प ने नाटकीयता का भी सृजन किया है —

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"शहर के उस ओर खण्डहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी।"

'ब्रह्मराक्षस' की फैंटेसी के द्वारा कवि यथार्थ की अभिव्यक्ति करता है। गैर यथार्थवादी शिल्प के माध्यम से यथार्थवादी विषयों की अभिव्यक्ति उचित मानी जाती है किंतु कुछ कवियों ने इस शिल्प के द्वारा कल्पना जगत में उड़ान भरा है, जिसे उचित नहीं माना जा सकता है। मुक्तिबोध ने इस शिल्प के द्वारा मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का ऐतिहासिक उत्तरदायित्व समझाने का प्रयास किया है जो वास्तव में प्रशंसनीय है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ब्रह्मराक्षस में फैंटेसी मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

Good 2½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(क) सँदेसनि मधुबन-कूप भरे।

जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।

कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?

अपने नहिं पठवत नँदनंदन हमरेउ फेरि धरे।।

मसि खूँटी कागर जल भींजे, सर दव लागि जरे।

पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक-कपाट अरे?

सन्दर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्य-अवतरण सूरदास द्वारा रचित है जिसका संकलन आचार्य शुक्ल ने भ्रमरगीत सार नाम से किया है। इन पंक्तियों में गोपियाँ कृष्ण को भेजे गए संदेश का उत्तर न पाने पर उपालम्भ कर रही हैं।

व्याख्या

गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण को अनेक संदेश भिजवाया गया किंतु किसी का उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। मालूम नहीं कि वे संदेश लेकर पहुँचे या नहीं। यदि संदेश लेकर पहुँच भी गए तो मथुरा में ऐसा साधन ही नहीं है कि वे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कुबरी लैला का पार्ए। आशय यह है कि वहाँ कागज, कलम का अभाव प्रतीत होता है।

काव्य सौन्दर्य

भाषा - ब्रजभाषा
बिम्ब - दृश्य
अलंकार - उपालम्भ, रूपक
संगीतात्मकता

विशेष

•) विरह की रूपविदाक एवं मर्मस्पर्शी वर्णन।
•) आचार्य शुक्ल के अनुसार - श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालम्भ दूसरा नहीं है।
(e) गोपियाँ नखपतान के अपनी स्वतंत्रता का उद्घोष करती है

प्रासंगिकता → वर्तमान के ऑनर किलिंग, दलित मर्डर, तलाक जैसी समस्याओं में कवि प्रेम की प्रतिबद्धता का सही स्वरूप समझाते हैं।

Good 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोहि।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग दी गयी काव्य पंक्तियाँ संतकाव्यधारा के प्रमुख रचनाकार 'कबीर' द्वारा रचित है जिसे श्यामसुन्दर दास ने 'कबीर ग्रंथावली' नाम से संकलित किया है। ये पंक्तियाँ इसके 'विरह कौ अंग' से ली गयी है।

व्याख्या

कबीर कहते हैं कि मेरे इन नैनों में राम का वास हो गया है। अब वे मुझे बाहर दिखायी नहीं देते हैं। ऐसे में ये नैन उनकी चारों ओर तलाश करते रहते हैं। अब वे आग्रह करते हैं कि हे राम, इन नैनों को दर्शन देकर मुझे भव-बाधा से मुक्त करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - अवधी के साथ पंचमेल खिचड़ी
- गेयता
- दोहा छन्द (48 मात्राएं)
- तुक, लय बना हुआ है।

विशेष

- कबीर की निर्गुण राम के प्रति पतिव्रता।
- लोगों को यह संदेश कि जीवन का कल्याण ईश्वर की साधना में है

प्रासंगिकता - वर्तमान समाज के मूल्य अंधाधुंध पाश्चात्य मूल्यों के अनुसार हो रहे हैं। ऐसे में कबीर भारतीय संस्कृति का मूल्य बता रहे हैं

Good Attempt

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) सायक-सम मायक नयन, रंगे त्रिविध रंग गात।
झखौ विलखि दूरि जात जल, लखि जल-जात लजात।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि 'बिहारी' की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है। इसमें कवि ने श्रृंगार में लगे हुए नायिका एवं नायिका की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या

~~बिहारी कहते हैं कि नायिका एवं ~~नायिका~~ नायक प्रेम में संलग्न हैं। जब नायिका नायक के नैनों में दिखती है तो लज्जा का भाव आ जाता है उनके बड़े-बड़े नैनों में नायक का रूप आ जाता है और वह अपनी छवि दूसरी तरफ फेर लेती है।~~

अर्थ पर ध्यान दें

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - परिष्कृत ब्रजभाषा
- अलंकार - अन्योक्ति
- प्रतीकात्मकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- जटिल बिम्ब, दृश्य बिम्ब
- दोहा छन्द (48 मात्राएं)
- अनुभाव की केन्द्रीयता

विशेष

- जॉर्ज ग्रियर्सन बिहारी के बारे में कहते हैं –

"पूरे यूरोप में एक भी कवि बिहारी की बराबरी नहीं कर सकता।"
(शिल्पगत श्रेष्ठता हेतु)

- 'कल्पना की समाहार क्षमता' और 'भाषा की समास क्षमता' का सुन्दर उल्लेख।
- रीतिकाल की श्रृंगारिक मानसिकता केन्द्र में है।

6/10
Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,-ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

सन्दर्भ एवं प्रसंग

ये पंक्तियाँ छायावाद के महाप्राण 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की सर्वोत्कृष्ट रचना 'राम की शक्तिपूजा' (1936) से उद्धृत है। इसमें 'सानु तथा' में बैठे राम के स्मरण में सीता के आने का दृश्य है।

व्याख्या

युद्ध भूमि से लौटे राम के मन में संशयता, विकलता एवं पराजय बोध की भावना भरी हुयी है ऐसे में वे अपने जीवन के सुन्दरतम स्मृतियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

से ऊर्जा प्राप्त करते हैं, और ये स्मृति है सीता से उनके प्रथम मिलन की। इस स्मृति के परिणामस्वरूप वह विश्व-विजय की भावना से भर जाते हैं।

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - मंझी हुयी खड़ी बोली
- बिम्ब - कोमल व सुकुमार (नयनों का नयनो - —)
- प्रकृति की उपस्थिति
- तुक, छन्द की अनुपस्थिति, आंतरिक लय है।

विशेष

- निराला राग - विराग के कवि हैं। दुःख में भी (अंधकार घन) वे खुशी होने की प्रयास करते हैं (विप्लुत)
- प्रतीकात्मक रूप से यह राष्ट्रीय आंदोलन व उसके आत्मसंघर्ष से भी जुड़ती है।

प्रासंगिकता। निराला मानवीय प्रेम के कवि हैं।

Good A 6½ /10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) त्याग, तप, भिक्षा? बहुत हूँ जानता मैं भी, मगर,
त्याग, तप, भिक्षा, विरागी योगियों के धर्म हैं;
याकि उसकी नीति, जिसके हाथ में शायक नहीं;
या मृषा पाषण्ड यह उस कापुरुष बलहीन का,
जो सदा भयभीत रहता युद्ध से यह सोचकर
ग्लानिमय जीवन बहुत अच्छा, मरण अच्छा नहीं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश मानवतावादी रचनाकार रामधारी सिंह दिनकर' की प्रतिनिधि रचना 'कुरुक्षेत्र' से लिया गया है। इसमें' दिनकर का युद्धदर्शन व्यक्त हुआ है।

व्याख्या भीष्म पितामह युधिष्ठिर के ग्लानिमय हृदय को समझाते हुए कहते हैं कि यह तथ्य है कि कुरुक्षेत्र में अनेक लोगों की मृत्यु हुयी, किंतु अन्याय को पराजित करना तुम्हारा कर्तव्य था। त्याग, तप, भिक्षा नैतिकता की पूंजी हैं किंतु असमानता, शोषण, पर आधारित समाज तो जीने योग्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं हो सकता है। ऐसे में धर्म यही है कि उसका प्रतिकार करें।

काव्य सौंदर्य

- भाषा - खड़ी बोली
- वाद- विवाद की शैली
- आंतरिक लय, तुक बना हुआ है
- संगीतात्मकता भी है

विशेष

i) यह प्रतीक रूप में राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं द्वितीय विश्वयुद्ध से जुड़ी है

ii) धर्म और आपद् धर्म में अंतर की समझ।

प्रासंगिकता

वर्तमान जमावेशी विकास के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए ~~जिससे~~ और समाज में असमानता एवं शोषण की नकारात्मकता में कमी आनी चाहिए

Good Ans 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'कबीर एक महान संत और समाज-सुधारक ही नहीं, अद्वितीय कवि भी हैं।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में उन विशेषताओं का निर्देश कीजिए जो कबीर के काव्य की अद्वितीयता के कारण हैं। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। ऐसे में उनकी समीक्षा करते समय यह बात पर द्वन्द्व उठता है कि उनका मूल व्यक्तित्व कौन सा है। संत, समाज सुधार, कवि या भक्त। आचार्य द्विवेदी उन्हें मूलतः भक्त मानते हैं एवं अन्य पक्षों को उनका उत्पाद बताते हैं।

कबीर भक्त के साथ-साथ महान संत भी हैं। एक संत के समान उनमें सांसारिक सुखों के प्रति विरक्ति का भाव, लालच का अभाव, आध्यात्मिकता एवं जनकल्याण की भावना निहित है। उदाहरण

"मन मस्त हुआ तो क्यों बोले
मेरा साहब है घर माहीं, बाहर नैना क्यों खोले"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर महान समाज सुधारक भी हैं। वे बुद्ध, गांधी, अंबेडकर की परंपरा में शामिल हो जाते हैं। एक समाज सुधारक के रूप में उनमें सामाजिक विसंगतियों की पहचान, मौलिक एवं समयानुकूल जीवन दृष्टि एवं उसे प्राप्त करने का आत्मविश्वास है। द्रष्टव्य है

"हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ
अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।"

कबीर का एक पक्ष कवि होना भी है हालांकि उन्होंने स्वीकार किया है कि "मसि कागद छुयो नहिं कलम गहि नहिं हाथ" एवं "जिन हम गाये गीति हैं वह निज ब्रह्म बिचार।"

फिर भी जब ईश्वर मिलन संबंधी कविताएं रचते हैं तो किसी भी बेहतर कवि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए ईर्ष्या का विषय बन जाता है। द्रष्टव्य है

"जो बिछुड़े हैं पियारे से भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें हमन को इन्तजारी क्या।"

इसके अतिरिक्त उनकी भाषा लोकवादी दृष्टि से उच्च स्तर पर है इसीलिए आचार्य द्विवेदी कहते हैं कि कबीर 'वाणी के डिक्टेटर' हैं। उनकी व्यंग्य शैली एवं सन्दर्भ विशेष में शब्द-चयन किसी भी कवि को चुनौती प्रस्तुत करती है—

"मैं तो कूता राम का मुतिया मेरा नाउँ
गले राम की जेवड़ी जित खैंचे तित जाउँ।"

कबीर के काव्य की महत्ता का कारण यह भी है कि उन्होंने समाज के प्रति प्रतिबद्धता जताई है और

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक आडंबर, सामाजिक विषमताओं का विरोध किया है -

"काँकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय"

कबीर ने भाषा के स्तर पर लोकभाषा को महत्व दिया है -

"संस्कृत है कूपजल भाषा बहता नीर"

स्पष्ट है कि भक्तिकाल में कबीर की उपस्थिति ने एक नये युग का सूत्रपात किया जिसका प्रमाण नागार्जुन की कविता में दिखायी देता है।

V. Good

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय रचना है'- इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल का यह कथन 'पद्मावत' की नागमती के बारे में है। नागमती के विरह वर्णन में वे सभी दशाएँ विद्यमान हैं जो आदर्श विरह की आवश्यकता है।

नागमती का विरह रानीपन में नहीं नारीपन में प्रस्तुत होता है। यह पवित्रता, सात्विकता, एवं गार्हस्थिकता विरह के सच्चाई से अवगत कराती है। नागमती की मनःस्थिति वही है जो साधारण नारी की होती है-

"जेठ जरै जग बहै लुवारा
उठै बवंडर धिकै पहारा
चारिहु पवन झकोरै आगि
लंका दाहि पलंका लागि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नागमती का विरह अपने त्याग में अतुल है रत्नसेन के दापित्वहीन प्रेम पर भी वह अपना समर्पण कर देती है –

" यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरैं जहँ पांव।"

साधारणत: ऐसा देखा जाता है कि प्रकृति भी विरह में भागी होता है जैसे सूर के यहाँ - "मधुबन तुम कत रहत हरे," तुलसी के यहाँ - "हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।" उसी प्रकार नागमती के विरह में भी प्रकृति की उपस्थिति है हालांकि प्रकृति नागमती के विरह से दुखी भी है –

" फिर फिर रोव कोउ नहिं डोला
~~आधि राति बिहंगम बोला।"~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमती के विरह की महत्वपूर्ण विशेषता उदात्तता भी है- "दहि कोयला भई कंत सनेहा।"

हालांकि कुछ आलोचक इसमें मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण भी करते हैं कि यह विरह नागमती में ही है, रत्नसेन में नहीं। फिर भी नागमती का विरह अपनी प्रकृति में अनूठा है।

Good A 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

सूर के उद्धव कृष्ण एवं गोपियो के मध्य संवाद स्थापित करते हैं। वे कृष्ण का संदेश लेकर गोपियो के समक्ष अवतरित हुए हैं और गोपियों की व्यथा कृष्ण से कहते हैं।

उद्धव गोपियों को संदेश देते हैं कि उन्हें निर्गुण भक्ति करनी चाहिए और योग साधना करनी चाहिए। आज भी विभिन्न माध्यम जैसे टी.वी., रेडियो, इंटरनेट भी व्यक्तियों के मध्य संवाद की भूमिका निभाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिस प्रकार से उद्धव गोपियों के तर्कों से प्रभावित हो जाते है वही आज अनुनय एवं सामाजिक प्रभाव कहलाता है—

"अब अति पंगु भयो मन मेरो, गयो तहाँ निर्गुन कहिबे को भयो सगुण को चेरो।"

आज के राजनेता भी अपनी विचारधाराओं को तर्कों के माध्यम से जनता के बीच ले जाते हैं और जनता भी तर्कमूलक प्रश्न करती है जैसे गोपियां—

"निर्गुन कौन देस को बासी मधुकर हँसि समुझाय सौंह दे बूझति साँच न हाँसी।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आज के नेता जिस प्रकार बुद्धि का प्रयोग करते हैं और जनता भावना का। वही प्रतीक कृष्ण उद्धव व गोपियों का है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उद्धव व गोपियाँ आज के जीवन का प्रतिबिम्बित करती हैं।

8½/15

क्या यह प्रतीक प्रश्नांकित पंक्ति से उभरता है? इस पर नोट करें

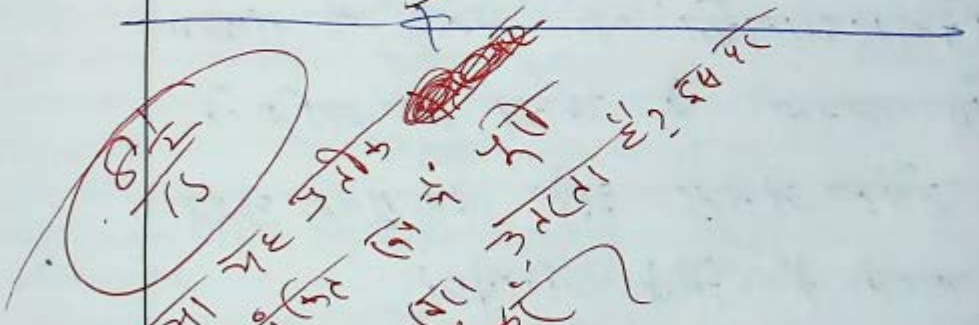

Copyright – Drishti The Vision Foundation